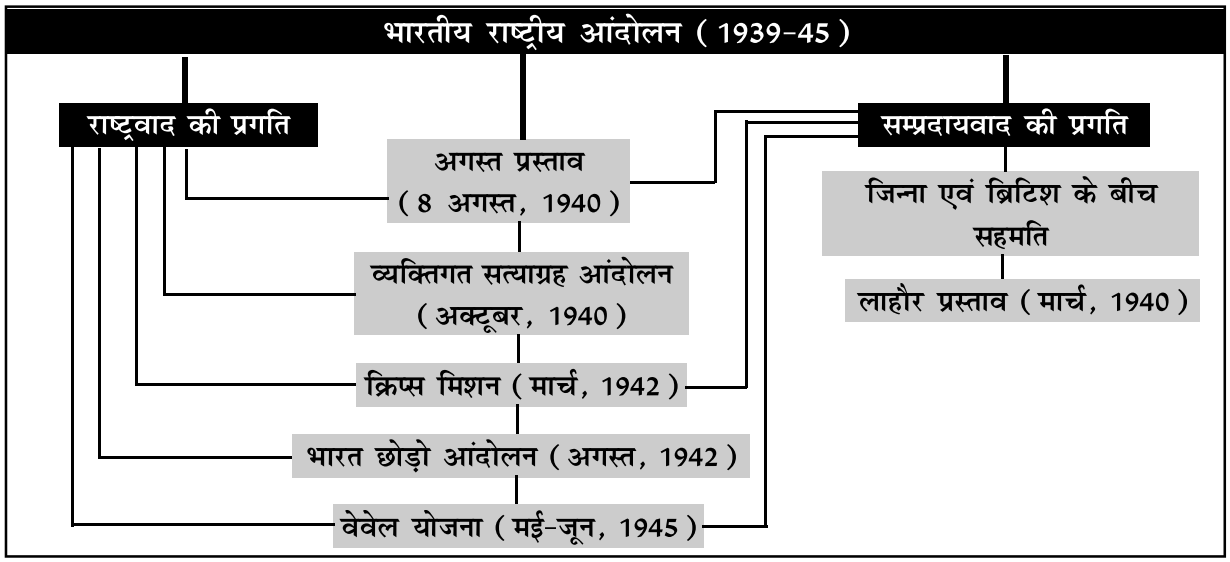

■ **द्वितीय विश्व युद्ध ने एक ही साथ राष्ट्रवाद एवं सम्प्रदायवाद की विचारधारा को प्रोत्साहन दिया।**

राष्ट्रवाद की प्रगति

अगस्त प्रस्ताव (8 अगस्त, 1940 ई.)

- कांग्रेस की प्रांतीय सरकारों से त्यागपत्र के बाद कांग्रेस को संतुष्ट करने तथा युद्ध में कांग्रेस का सहयोग प्राप्त करने के लिए लॉर्ड लिनलिथगो ने 8 अगस्त, 1940 ई. को एक प्रस्ताव रखा, जिसे 'अगस्त प्रस्ताव' का नाम दिया गया। इस प्रस्ताव में अंतरिम सरकार का गठन करने की माँग को खारिज कर दिया गया। अतः इस प्रस्ताव को कांग्रेस और मुस्लिम लीग (पाकिस्तान की माँग स्पष्टतः स्वीकार न करने के कारण) ने भी अस्वीकार कर दिया।

अगस्त प्रस्ताव में निम्नलिखित प्रावधान थे-

- इस प्रस्ताव में संविधान को लागू करने के लिये भारतीयों के अधिकार को स्वीकार किया गया और यह संविधान मुख्य रूप से भारतीयों द्वारा तैयार किया जाना था।
- इस प्रस्ताव के अनुसार एक युद्ध सलाहकार परिषद् का गठन भी किया जाना था।
- इसमें वायसराय की परिषद् के विस्तार का प्रावधान था, ताकि इसमें कुछ भारतीय सदस्यों को भी शामिल किया जा सके।

व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन (अक्टूबर, 1940)

- सरकार का विरोध करने के लिये गाँधी जी के नेतृत्व में 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया गया। वस्तुतः उस समय कांग्रेस के अंदर एक अखिल भारतीय आंदोलन आरंभ करने के मुद्दे कर परस्पर मतभेद था। नेहरू के साथ-साथ गाँधी भी एक अखिल भारतीय आंदोलन छेड़ने से कतरा रहे थे क्योंकि उनका मानना था कि इसके कारण फासीवादी शक्ति की स्थिति मजबूत हो जायेगी।
- व्यक्तिगत सत्याग्रह गांधीजी की विचारधारा पर आधारित सत्याग्रह था, जिसका मुख्य उद्देश्य वैश्विक स्तर पर यह बतलाना था कि द्वितीय विश्वयुद्ध में भारतीय जनता ब्रिटिश सरकार के साथ नहीं है। इस व्यक्तिगत सत्याग्रह में विनोबा भावे पहले सत्याग्रही बने तथा दूसरे सत्याग्रही जवाहरलाल नेहरू थे।

क्रिप्स मिशन (मार्च, 1942)

- द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान दक्षिण-पूर्व एशिया में ब्रिटिश के पाँव उखड़ रहे थे। साथ ही, ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल पर भारत के साथ समझौता करने के लिए मित्र राष्ट्रों का दबाव बढ़ रहा था। अतः मार्च, 1942 में ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री चर्चिल की सरकार ने भारतीय नेताओं से वार्ता करने के लिये स्टैफोर्ड क्रिप्स के अधीन एक मिशन भेजा। क्रिप्स मिशन प्रस्ताव में निम्नलिखित प्रावधान थे-
- युद्ध की समाप्ति के पश्चात् भारत को डोमिनियन राज्य का दर्जा दिया जाएगा।
- युद्ध की समाप्ति के पश्चात् भारत को संविधान निर्माण की शक्ति दी जायेगी और यह संविधान केवल भारतीयों के द्वारा निर्मित होगा। गाँधीजी ने इसे 'पोस्ट डेटेड चेक' कहा। कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग, दोनों ने क्रिप्स प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

भारत छोड़ो आंदोलन (अगस्त, 1942)

रणनीति एवं कार्यक्रम :-

- 7 अगस्त, 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक बंबई में अबुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में आयोजित हुई। इस बैठक में 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव पेश किया गया और 8 अगस्त को कुछ संशोधन के बाद उसे पारित कर दिया गया। 8 अगस्त, 1942 को गांधीजी ने बंबई बैठक में जनता को 'करो या मरो' का नारा दिया। अगस्त संकल्प पर बोलते हुए गांधीजी ने अहिंसक जनांदोलन का आह्वान किया।

- इस प्रस्ताव के पारित होने के शीघ्र बाद सरकार सक्रिय हो गई तथा 9 अगस्त, 1942 के सुबह तक कांग्रेस के सभी महत्वपूर्ण नेता गिरफ्तार कर लिए गए, परंतु जनता अनियंत्रित हो गई। फिर 9 अगस्त से 14 अगस्त के बीच मुंबई एवं कलकत्ता अशांत रहे।
- 15 अगस्त तक यह ग्रामीण क्षेत्रों में फैल गया। बिहार के भोजपुर क्षेत्र से यह संयुक्त प्रांत के भोजपुर क्षेत्र में फैल गया तथा बलिया एवं गाजीपुर में चित्तू पांडे के अधीन एक समानांतर सरकार स्थापित हुई। उसी प्रकार, मिदनापुर में एक जातीय सरकार स्थापित हुई। वैसे तो इस आंदोलन का प्रभाव संपूर्ण भारत पर देखा गया, परंतु इसके चार प्रमुख केंद्र रहे थे- बिहार-उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, बंगाल, महाराष्ट्र-कर्नाटक।
- सरकार के द्वारा भी अभूतपूर्व दमन चक्र लगाया गया। इसलिए जब ग्रामीण क्षेत्रों में इस आंदोलन की कमर टूटने लगी, तो फिर छात्रों और बुद्धिजीवियों ने इसकी कमान संभाली और गोरिल्ला पद्धति से संघर्ष जारी रखा। यह स्मरणीय है कि यह एक ऐसा आंदोलन था जिसे कांग्रेस ने अधिकृत रूप में कभी भी वापस नहीं लिया था।

भारत छोड़ो आंदोलन का महत्व :-

- इस आंदोलन ने निम्नलिखित तरीके से स्वतंत्रता के मुद्दे को प्राथमिकता की पहली सूची में ला दिया-

1. इस आंदोलन से यह साबित हुआ कि राष्ट्रवाद समाज के निचले स्तर पर पहुँच गया है।
2. इसने बताया कि ब्रिटिश को अपना शासन बनाए रखने के लिये सेना और पुलिस पर अधिक निर्भर रहना पड़ता है।
3. इस आंदोलन ने ब्रिटिश को बताया कि भारतीय पूर्ण स्वतंत्रता से कम किसी भी समझौते पर संतुष्ट नहीं होंगे।
4. भविष्य में किसी भी आंदोलन में हिंसक या अहिंसक तरीके के बीच सीमांकन की किसी भी रेखा को खींचना मुश्किल होगा।

प्रश्न :- "भारत छोड़ो आंदोलन ने भारत की स्वतंत्रता के मुद्दे को प्राथमिकता की पहली सूची में ला दिया।" टिप्पणी कीजिये।

*(**प्रश्न विश्लेषण:** यह प्रश्न अपने स्वरूप में Hypothetical है। Key Word हैं- 'भारत छोड़ो आंदोलन', 'भारत की स्वतंत्रता', 'प्राथमिकता', 'पहली सूची', 'टिप्पणी'।)*

उत्तर: भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। यह आंदोलन न केवल ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ सबसे सशक्त व मुखर साबित हुआ, बल्कि इसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को प्राथमिकता की पहली सूची में लाकर रख दिया। इसे हम निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं-

- इस आंदोलन का स्वरूप इतना व्यापक रहा था कि इसने पूरे भारत को अपने आगोश में ले लिया। इतना ही नहीं, इस आंदोलन ने ब्रिटिश सरकार को यह स्पष्ट कर दिया कि अब भारतीय जनता स्वतंत्रता से कम किसी समझौते पर तैयार नहीं होगी।
- इस आंदोलन में काफी हद तक वर्गीय हितों के शून्य हो जाने का संकेत मिला था। अब भारतीय जनता वास्तविक शत्रु को पराजित करने के लिये आपसी भेदभाव भुलाने को तैयार थी।
- सबसे बढ़कर, अब तक ब्रिटिश को ऐसा विश्वास था कि महात्मा गांधी के नेतृत्व में जो आंदोलन होगा, वह अहिंसक आंदोलन होगा, परंतु भारत छोड़ो आंदोलन ने यह सिद्ध कर दिया कि भविष्य में जो आंदोलन होगा, उसमें हिंसा व अहिंसा के बीच स्पष्ट भेद करना मुश्किल हो जाएगा। अत: यह ब्रिटिश के लिये खतरे की घंटी थी।
- यह आंदोलन कॉन्ग्रेस के पूर्व आंदोलनों से भिन्न था, क्योंकि इस आंदोलन ने पहली बार राष्ट्रवादी तथा साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच समझौता रहित संघर्ष का चरम रूप दिखा दिया था। अब राष्ट्रीय आंदोलन की एकमात्र मांग स्वतंत्रता बन गई थी। अत: भारत छोड़ो के आह्वान के बाद पीछे नहीं मुड़ा जा सकता था। औपनिवेशिक सरकार के साथ भविष्य में जो भी वार्ता होनी थी, वह सत्ता के हस्तांतरण के मुद्दे पर होनी थी।

इस प्रकार स्पष्ट है कि इस आंदोलन ने स्वतंत्रता को प्राथमिकता की पहली सूची में ला दिया।

वेवेल योजना

- नये वायसराय वेवेल ने एक योजना प्रस्तुत की, इस योजना के अनुसार-

1. वायसराय की परिषद् में वायसराय को छोड़कर बाकी सभी 10 सदस्य भारतीय होने थे।
2. वायसराय का कहना था कि यद्यपि उसकी विवेकाधीन शक्तियाँ बनी रहेंगी परन्तु उसने आश्वासन दिया कि वह उसका दुरूपयोग नहीं करेगा।
3. फिर 10 प्रतिनिधियों में से 5 कांग्रेस द्वारा दिए जाने थे और 5 मुस्लिम लीग द्वारा। यह अपने आप में एक प्रगतिहीन कदम था क्योंकि मुस्लिम लीग का राजनीतिक वजन कॉन्ग्रेस के बराबर का नहीं था।

- फिर भी कांग्रेस ने इसे स्वीकार किया, परन्तु मुख्य समस्या तब आई जब कांग्रेस ने अपने प्रतिनिधियों में 2 मुस्लिम प्रतिनिधियों, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद और खान अब्दुल गफ्फार खान को चुना। किन्तु जिन्ना ने इन

प्रतिनिधियों का विरोध कर दिया क्योंकि उनका कहना था कि मुस्लिम प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार केवल मुस्लिम लीग को है।

- इस मुद्दे पर 14 और 25 जून के बीच शिमला में एक सम्मेलन भी हुआ, किन्तु इसका समाधान नहीं निकला तथा वेवेल ने इस योजना को रद्द कर दिया। इस प्रकार जिन्ना का वीटो सफल हो गया।

संप्रदायवाद की प्रगति

- **जिन्ना एवं ब्रिटिश के बीच सहमति एवं लाहौर प्रस्ताव (मार्च, 1940) :-** जैसा कि ब्रिटिश सरकार ने अपने युद्ध प्रयासों में कॉन्ग्रेस का समर्थन खो दिया था, इसलिये मुस्लिम लीग का समर्थन पाने के लिये ब्रिटिश सरकार ने सांप्रदायिकता के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। औपनिवेशिक सरकार ने भारत में मुसलमानों के एकमात्र नेता के रूप में जिन्ना को स्वीकार किया। इससे पूर्व ही जिन्ना ने मार्च, 1940 में लाहौर प्रस्ताव लाकर पृथक् एवं स्वतंत्र मुस्लिम राज्य के लक्ष्य को स्वीकार कर लिया था।
- **संप्रदायवाद के क्षेत्र में अगस्त प्रस्ताव का योगदान:-** इसने मुस्लिम लीग को वीटो शक्ति दे दी क्योंकि इसमें यह प्रावधान लाया गया था कि भारत में कोई भी ऐसा संविधान मंजूर नहीं किया जाएगा, जिस पर मुस्लिमों (अल्पसंख्यक) की सहमति न हो।
- **मुस्लिम संप्रदायवाद में क्रिप्स मिशन की भूमिका:-** इसमें एक 'लोकल ऑप्शन' का प्रावधान लाया गया था अर्थात् युद्ध की समाप्ति के पश्चात् भारतीयों के द्वारा निर्मित होने वाली संविधान सभा से अगर कोई प्रांत अलग रहना चाहे, तो उसे एक पृथक् संविधान बनाने का अधिकार होगा। यह 'लोकल ऑप्शन' का प्रावधान भारत की एकता और अखंडता के लिए घातक था तथा यह गुप्त रूप में पाकिस्तान की योजना को प्रोत्साहन था।
- **मुस्लिम संप्रदायवाद के क्षेत्र में वेवेल योजना की भूमिका:-** 1945 की वेवेल योजना में मुस्लिम लीग को अपनी वीटो शक्ति का प्रयोग करने का पहला अवसर प्राप्त हुआ, जब वेवेल के प्रयासों से लीग के पाँच सदस्यों को मिलाकर एक अंतरिम सरकार का गठन किया जाना था। लेकिन जिन्ना अंतरिम सरकार में कॉन्ग्रेस द्वारा किसी भी मुस्लिम को नामित किये जाने के पक्षधर नहीं थे। अंत में, जिन्ना के वीटो के कारण वेवेल ने इस योजना को रद्द कर दिया।

■■■

KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6
KHAN SIR

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात्)

स्वतंत्रता की ओर

- भारत छोड़ने को प्रेरित करने वाले कारक-
- ब्रिटिश साम्राज्य का पतन।
- भारत में निम्न स्तर तक राष्ट्रवादी चेतना का प्रसार।
- आजाद हिन्द फौज का मुकद्दमा एवं नौसैनिक विद्रोह।
- ब्रिटेन में सरकार का परिवर्तन।
- मार्च, 1946 में अल्पसंख्यकों के प्रति सरकार की नीति में परिवर्तन।
- मई-जून, 1946 में 'कैबिनेट मिशन योजना'।
- सितम्बर, 1946 में अन्तरिम सरकार का गठन।
- 20 फरवरी, 1947 को एटली सरकार द्वारा भारत की स्वतंत्रता की घोषणा।
- मार्च, 1947 में माउण्टबेटन का आगमन तथा जून, 1947 में माउण्टबेटन योजना के आधार पर भारत की स्वतंत्रता।

विभाजन की ओर

- मुस्लिम बहुसंख्यक प्रांतों में जिन्ना का बढ़ता हुआ प्रभाव।
- 1945-46 के चुनाव में जिन्ना एवं लीग की सफलता।
- जुलाई, 1946 में कैबिनेट मिशन योजना की अस्वीकृति।
- 16 अगस्त, 1946 को लीग के द्वारा प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस की घोषणा। इसके साथ कलकत्ता, बंबई, बंगाल के नोआखली एवं बिहार के मुंगेर में दंगे छिड़े।
- मार्च, 1947 में पंजाब में दंगे।
- अन्तरिम सरकार में मुस्लिम लीग के द्वारा बाधा उपस्थित करना।
- जून, 1947 में माउण्टबेटन योजना तथा भारत का विभाजन।

स्वतंत्रता की ओर

1. **ब्रिटिश साम्राज्य का पतन :-** द्वितीय विश्वयुद्ध के मध्य ब्रिटिश साम्राज्य का पतन हो गया था। उसकी अर्थव्यवस्था में इतनी गिरावट आई कि ब्रिटिश, भारत में ज़्यादा समय तक बने रहने की स्थिति में नहीं थे। वस्तुतः ब्रिटेन को भारत से एक बड़ा लाभ प्राप्त था और वह था भारत से प्राप्त होने वाली गृहव्यय की एक बड़ी राशि, जिसके माध्यम से वह अपने व्यापारिक घाटे को पूरा करता। परंतु द्वितीय विश्व युद्ध के मध्य स्वयं ब्रिटेन ही भारत का कर्जदार बन गया।

- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत ही ब्रिटिश का सैनिक मुख्यालय था जहाँ से ब्रिटिश संपूर्ण एशिया में युद्ध का संचालन करते थे। इसी क्रम में ब्रिटिश ने भारत में 25 लाख सैनिकों की एक बड़ी सेना खड़ी कर दी और तोप खाना एवं अन्य विभागों को भी मजबूत बनाया। इस कारण अब भारत स्वयं ब्रिटेन से भी अधिक ताकतवर हो गया था। इसलिए भारत पर शासन करने का ब्रिटिश औचित्य समाप्त हो गया।

2. **भारत में निम्न स्तर तक राष्ट्रवादी चेतना का प्रसार :-** भारत में राष्ट्रीय आंदोलन तेज़ हो गया था। भारत छोड़ो आंदोलन ने साबित कर दिया था कि भारत से अंग्रेज़ों का जाना बस कुछ समय मात्र की बात है। इस आंदोलन ने भारत की स्वतंत्रता को प्राथमिकता की पहली सूची में ला दिया था।

- स्वतंत्रता के लिए नीचे से पड़ने वाले दबाव को भी कम करके नहीं आंका जा सकता। ट्रेड यूनियन और श्रमिक आंदोलन की घटनाओं में 1945-46 के बीच तेजी आ गई थी। इतना तक कि 1945 में अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन ने सरकार से स्वतंत्रता की मांग की थी। दूसरी तरफ, 1946 में बंगाल में होने वाले तेभागा किसान आंदोलन तथा 1946 में होने वाले तेलंगाना किसान आंदोलन ने भी ब्रिटिश को भयभीत कर दिया और यह संकेत किया कि भारत में शासन करना उनके लिए बड़ा कठिन होगा।
- ब्रिटिश साम्राज्यवाद के प्रमुख स्तंभ सेना एवं पुलिस में भी राष्ट्रवादी चेतना घर कर गई थी। इतना तक कि सिविल सेवा जैसा इस्पाती ढाँचा भी टूट चुका था।

3. **आजाद हिन्द फौज का मुकद्दमा एवं नौसैनिक विद्रोह:-** सुभाष चंद्र बोस ने आई.एन.ए. (आजाद हिंद फौज) एवं एक स्वतंत्र सरकार का गठन अक्टूबर, 1943 में जापान के समर्थन से सिंगापुर में किया था। हालाँकि सैन्य रूप से यह बहुत सफल नहीं रहा, लेकिन जब 1945 में आई.एन.ए. के सदस्यों के खिलाफ लाल किले में मुकदमा शुरू हुआ तो आई.एन.ए. के सदस्यों को पूरे भारत में सहानुभूति और समर्थन प्राप्त हुआ।

- नौसैनिक विद्रोह बॉम्बे के समुद्री तट पर स्थित एक जहाज़ एच.एम.आई.एस. तलवार से शुरू हुआ और बहुत जल्द ही यह सभी 22 जहाज़ों में फैल गया। यह विद्रोह फरवरी, 1946 में हुआ और एम.एस. खान इसके नेतृत्वकर्त्ता के रूप में उभरे। यह घटना भारत में ब्रिटिश शासन के लिये एक बड़ा खतरा थी।

4. **ब्रिटेन में सरकार का परिवर्तन तथा अल्पसंख्यकों के प्रति सरकार की नीति में परिवर्तन :-** ब्रिटेन में सरकार का परिवर्तन हुआ तथा कंजरवेटिव पार्टी की जगह लेबर पार्टी की सरकार स्थापित हुई। मार्च, 1946 में क्लीमेंट एटली की सरकार ने घोषणा की कि अल्पसंख्यकों की माँगें विचारणीय हैं, परंतु उन्हें बहुसंख्यकों के हितों की उपेक्षा करके पूरा नहीं किया जा सकता। यह घोषणा भारत के संदर्भ में दृष्टि परिवर्तन की परिचायक थी। जिस प्रकार पहले ब्रिटिश नीति का बल भारत में विभाजन को प्रोत्साहन देने पर रहा था, वहीं अब उसका बल इस बात पर हो गया था कि अगर संभव हो सके तो भारत के विभाजन को रोका जाए।

5. **कैबिनेट मिशन योजना :-** मार्च, 1946 में कैबिनेट मिशन भारत आया। इसने जून, 1946 में अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की, जिसमें निम्नलिखित अनुशंसाएँ थीं-
   1. इसने विभाजन को अस्वीकार कर दिया क्योंकि यह एक व्यावहारिक निर्णय नहीं था।
   2. वैकल्पिक रूप से इसने एक तीन स्तरीय संरचना की अनुशंसा की-
      - **केंद्रीय सरकार:** एकीकृत कमज़ोर संघ, केवल रक्षा, विदेश नीति और संचार मामलों पर नियंत्रण रखेगा।
      - **प्रांतों का समूह:** प्रांतों को तीन समूह में विभाजित किया जाना था। समूह- 'A' में 6 हिंदू-बहुल प्रांतों को शामिल किया जाना था, जबकि समूह- 'B' में उत्तर-पश्चिम के तीन मुस्लिम-बहुल प्रांतों- सिंध, पंजाब एवं बलूचिस्तान को और समूह- 'C' में उत्तर-पूर्व के दो मुस्लिम-बहुल प्रांतों- असम एवं बंगाल को शामिल किया जाना था।
   3. निर्वाचित संविधान सभा का गठन किया जाना था।
   4. एक अंतरिम सरकार का गठन किया जाना था।

6. **अन्तरिम सरकार का गठन :-** सितंबर, 1946 में कैबिनेट मिशन योजना के आधार पर जवाहरलाल नेहरू के अधीन एक अंतरिम सरकार का गठन हुआ तथा 9 दिसंबर, 1946 को संविधान सभा की पहली बैठक बुलाई गई। शुरू में मुस्लिम लीग इस सरकार में शामिल नहीं हुई। आगे वायसरॉय वेवेल के विशेष अनुरोध पर वित्त मंत्री लियाकत अली खान के नेतृत्व में लीग अंतरिम सरकार में शामिल हुई।

7. **एटली सरकार द्वारा भारत की स्वतंत्रता की घोषणा :-** 20 फरवरी, 1947 को क्लीमेंट एटली की सरकार ने एक घोषणा की, जिसमें यह स्पष्ट किया गया कि जून, 1948 तक अंग्रेज़ी सरकार भारतवासियों को सत्ता सौंप देगी।

8. **माउण्टबेटन का आगमन तथा माउण्टबेटन योजना के आधार पर भारत की स्वतंत्रता :-** वायसरॉय के रूप में माउंटबेटन मार्च, 1947 में भारत आया। वह एक प्रत्यक्ष एजेंडे के साथ-साथ एक अप्रत्यक्ष एजेंडे को लेकर भारत आया था। प्रत्यक्ष एजेंडे के तहत कैबिनेट मिशन योजना को लागू करने के लिये गंभीर प्रयास करना था, किंतु उसके अप्रत्यक्ष एजेंडे के तहत सावधानी के साथ अंग्रेज़ों को भारत से वापस जाना था, ताकि ब्रिटिश सरकार की इस प्रवृत्ति को पलायनवाद न माना जाए।

- माउंटबेटन ने विभाजन के मुद्दे पर विभिन्न भारतीय नेताओं से वार्ता आरंभ की। सबसे पहले उसने पटेल से वार्ता की, फिर नेहरू, गांधी और अंततः जिन्ना से वार्ता की।

- माउंटबेटन की आरंभिक योजना **'डिक्की बर्ड योजना'** के नाम से जानी जाती है। इसे 'प्लान बाल्कन' भी कहते हैं। इसमें यह प्रावधान था कि ब्रिटिश भारत के विभिन्न प्रांत एवं देशी रियासतों को स्वतंत्र कर दिया जाए तथा उन्हें यह अधिकार प्राप्त हो कि वे अपनी इच्छानुसार भारत अथवा पाकिस्तान में शामिल हो जाएँ, किंतु जब माउंटबेटन ने यह योजना शिमला में जवाहरलाल नेहरू के समक्ष रखी तो उन्होंने इसे पूरी तरह अस्वीकार कर दिया।

- 3 जून, 1947 को माउंटबेटन योजना के रूप में जो प्रस्ताव रखा गया था, वास्तव में उसे वी.पी. मेनन के साथ मिलकर वल्लभभाई पटेल ने तैयार किया था। इसमें ब्रिटिश भारत को दो डोमिनियन राज्यों, यथा- भारत और पाकिस्तान में विभाजित करने का प्रावधान था तथा देशी राज्यों को अपनी क्षेत्रीय अवस्थिति के अनुसार भारत अथवा पाकिस्तान के साथ विलय करना था।

- इस योजना को 4 जुलाई, 1947 को ब्रिटिश संसद के द्वारा अनुमोदन मिल गया, फिर 18 जुलाई को इसे ब्रिटिश क्राउन की स्वीकृति मिली। फिर इसे क्रमशः 14 और 15 अगस्त को पाकिस्तान तथा भारत के संदर्भ में लागू किया गया।

विभाजन की ओर

- **मुस्लिम बहुसंख्यक प्रांतों में जिन्ना का बढ़ता हुआ प्रभाव :-** द्वितीय विश्व युद्ध के आरंभ होने के बाद कांग्रेस की प्रांतीय सरकारों का त्यागपत्र दिया जाना घातक सिद्ध हुआ क्योंकि उसके कारण जो राजनीतिक शून्य की स्थिति उत्पन्न हुई, उसे मुस्लिम लीग ने शीघ्र भर दिया अर्थात् मुस्लिम लीग की प्रगति हुई।
- **1945-46 के चुनाव में जिन्ना एवं लीग की सफलता:-** 1945-46 के चुनाव में कांग्रेस को बड़ी सफलता प्राप्त हुई परंतु साथ ही मुस्लिम लीग को भी सफलता प्राप्त हुई। पहली बार 2 मुस्लिम बहुल प्रांतों में उसकी सरकारें बनी और फिर केंद्रीय विधान मंडल की आरक्षित सीटें भी उसी को प्राप्त हो गईं। इसका अर्थ था कि 1937 एवं 1945 के बीच मुस्लिम लीग की अत्यधिक प्रगति हो चुकी थी और वह मुस्लिम संप्रदायवाद को अभिजात्य चरण से जन समुदाय के स्तर तक पहुंचा चुकी थी।
- **जुलाई, 1946 में कैबिनेट मिशन योजना की अस्वीकृति तथा प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस की घोषणा:-** शुरू में मुस्लिम लीग ने कैबिनेट मिशन योजना को स्वीकार कर लिया था, लेकिन प्रांतीय समूह के विभाजन के मुद्दे पर मतभेद सामने आए और मुस्लिम लीग इस योजना से पीछे हट गई। 16 अगस्त, 1946 को मुस्लिम लीग ने 'प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस' की घोषणा की। हालाँकि, प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस का उद्देश्य शांतिपूर्ण प्रदर्शन था, लेकिन इस दिन कलकत्ता में मुस्लिम लीग की सरकार द्वारा नरसंहार शुरू कर दिया गया। इसके परिणामस्वरूप बंबई, पूर्वी बंगाल के नोआखली और बिहार के मुंगेर ज़िले में हिंदू-मुस्लिम दंगे भड़क गए।
- **अन्तरिम सरकार में मुस्लिम लीग के द्वारा बाधा उपस्थित करना :-** इस तनाव के माहौल में जब सितंबर, 1946 में अंतरिम सरकार का गठन हुआ तो सरकार का संचालन कठिन हो गया। सरकार के अंतर्गत लीग के मंत्रियों का नज़रिया नकारात्मक रहा तथा उनका उद्देश्य कार्यवाहियों को रोकना रहा। अतः सर्वप्रथम कॉन्ग्रेसी नेताओं में सरदार वल्लभभाई पटेल अत्यधिक क्षुब्ध हो गए तथा वे विभाजन की सच्चाई को स्वीकार करने के लिये तैयार हो गए। इसी क्रम में 20 फरवरी, 1947 को एटली की सरकार की घोषणा आयी जिसमें यह आश्वासन दिया गया था कि जून, 1948 तक भारत को प्रत्येक स्थिति में स्वतंत्रता मिल जायेगी। साथ ही, यह भी संकेत दिया गया कि सत्ता के केंद्र एक से अधिक भी हो सकते हैं।
- **मार्च, 1947 में पंजाब में दंगे :-** ब्रिटिश सरकार द्वारा स्वतंत्रता की तिथि घोषित करना घातक साबित हुआ, क्योंकि इसे मुस्लिम लीग ने एक अवसर के रूप में लिया। फिर मार्च, 1947 में मुस्लिम लीग ने पंजाब में सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ कर खिज्र हयात खान की सरकार को गिरा दिया। लेकिन, लीग के इस गैर-विधिक कार्य के परिणामस्वरूप पंजाब में दंगा भड़क गया।
- **जून, 1947 में माउण्टबेटन योजना तथा भारत का विभाजन :-** मार्च, 1947 में नए वायसराय के रूप में माउंटबेटन का आगमन हुआ जिसका घोषित रूप में उद्देश्य कैबिनेट मिशन योजना को लागू करवाना था, परंतु माउंटबेटन ने ऐसा महसूस किया कि तात्कालिक परिस्थितियों में कैबिनेट मिशन योजना को लागू करना कठिन था। अतः माउंटबेटन ने विभाजन को प्राथमिकता दी। फिर विभिन्न राजनीतिक नेताओं से वार्ता कर उसने 3 जून, 1947 को माउंटबेटन योजना प्रस्तुत की। इसी आधार पर 14 अगस्त को भारत का विभाजन हो गया।

प्रश्नः- "द्वितीय विश्वयुद्ध ने भारत की स्वतंत्रता के साथ-साथ विभाजन को भी प्रोत्साहन दिया।" इस कथन का सोदाहरण विश्लेषण कीजिये।

*(**प्रश्न विश्लेषणः** यह प्रश्न अपने स्वरूप में Hypothetical है। Key Words हैं- 'द्वितीय विश्वयुद्ध', 'स्वतंत्रता', 'विभाजन', 'प्रोत्साहन', 'सोदाहरण विश्लेषण'।)*

उत्तरः- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के मध्य स्वतंत्रता एवं विभाजन की दिशा में साथ-साथ प्रगति होती रही तथा द्वितीय विश्वयुद्ध इस प्रगति के मार्ग में एक निश्चित भू-चिह्न (Land Mark) बनकर आया।

द्वितीय विश्वयुद्ध ने निम्नलिखित रूप में स्वतंत्रता को प्रोत्साहन दिया-

- इसने भारत में एक व्यापक जन-असंतोष को जन्म दिया तथा इसका परिणाम था- भारत छोड़ो आंदोलन। इस आंदोलन ने भारत की स्वतंत्रता के मुद्दे को प्राथमिक राष्ट्रीय मुद्दा बना दिया।
- आज़ाद हिंद फौज एवं नौसैनिक विद्रोह ने यह सिद्ध कर दिया कि अब ब्रिटिश साम्राज्य का सबसे मज़बूत स्तंभ 'सेना' भी राष्ट्रवाद से प्रभावित हो चुका है।

- द्वितीय विश्वयुद्ध के मध्य स्वयं ब्रिटिश साम्राज्य का पतन हो गया था, अत: भारत को स्वतंत्र करना ब्रिटेन की मज़बूरी थी।

परंतु, दूसरी तरफ द्वितीय विश्वयुद्ध ने भारत के विभाजन को भी बल प्रदान किया। युद्ध के मध्य मुस्लिम लीग की सहायता प्राप्त करने के लिये सरकार ने उसे भारत के संवैधानिक विकास के विरुद्ध वीटो की शक्ति दे दी। लीग ने इसका खुलकर उपयोग किया तथा वेवेल योजना जैसे महत्त्वपूर्ण संवैधानिक प्रस्ताव को ध्वस्त कर दिया।

इस प्रकार, द्वितीय विश्वयुद्ध ने भारत की स्वतंत्रता एवं इसके विभाजन, दोनों को प्रोत्साहन दिया।

प्रश्न:- 'विभाजन के कारणों को जानने से अधिक महत्वपूर्ण हो गया है भारत के विभाजन के परिणाम को समझना।' इस कथन का युक्तियुक्त विवेचन कीजिए।

उत्तर:- भारत के विभाजन के पश्चात् लगभग पाँच दशकों तक विद्वानों और इतिहासकारों ने भारत के विभाजन की पड़ताल करने में गहरी रूचि दिखाई थी। उनका पूरा ध्यान इस बात का पता लगाने पर रहा था कि विभाजन के लिए कौन उत्तरदायी था।

परंतु पिछले दो दशकों से विद्वानों और इतिहासकारों की सोच एवं बहस की दिशा बदल चुकी है तथा विभाजन के कारणों की जगह उसके प्रभावों के मूल्यांकन पर विशेष बल दिया जा रहा है क्योंकि इस विभाजन ने भारत और पाकिस्तान पर ही अपना प्रभाव नहीं छोड़ा, बल्कि लगभग सम्पूर्ण दक्षिण एशिया को प्रभावित किया। उसके प्रभाव को निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं–

1. दक्षिण एशिया में भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के रूप में तीन भिन्न राष्ट्रों का निर्माण हुआ। फिर भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव ने परमाणु हथियारों की प्रतिस्पर्द्धा को भी जन्म दे दिया।
2. इन दोनों देशों के बीच तनाव के कारण SAARC जैसा संगठन भी विफल सिद्ध हुआ।
3. विभाजन ने भारत में संविधान के स्वरूप पर भी प्रभाव डाला। उदाहरण के लिए, भारत में संघीय व्यवस्था, नागरिकता, मौलिक अधिकार सभी प्रावधानों पर विभाजन का प्रभाव देखा जा सकता है।
4. सबसे बढ़कर इसने भारत के अन्दर भी हिन्दू एवं मुस्लिम जनसंख्या के बीच पारस्परिक अविश्वास का भाव पैदा कर दिया।

अन्त में, हम यह भी पाते हैं कि उसने भारत में गंगा-यमुनी संस्कृति अथवा समन्वित संस्कृति को भी दुष्प्रभावित किया।

■■■

KHAN GLOBAL STUDIES
Kisan Cold Storage Campus, Musallahpur, Patna-6
KHAN SIR